

वशेष दरजा

चर्चा में क्यों?

आम चुनावों के बाद, जनता दल (यूनाइटेड) और तेलुगु देशम पार्टी केंद्र में सरकार गठन में प्रभावशाली पार्टी के रूप में उभरी हैं।

- बहिर और आंध्र प्रदेश के लिये **वशेष श्रेणी का दरजा** हासिल करने पर उनके नए ज़ोर ने इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा को फरि से शुरू कर दिया है।

मुख्य बद्दि:

- **वशेष श्रेणी का दरजा** केंद्र सरकार द्वारा **भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों** का सामना कर रहे राज्यों के विकास में सहायता के लिये प्रदान किया गया वर्गीकरण है।
 - वर्तमान में भारत में 11 राज्य SCS से युक्त हैं, जिनमें **अरुणाचल प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नगालैंड, सकिक्मि, त्रिपुरा** तथा **उत्तराखंड** शामिल हैं।
- वशेष श्रेणी का दरजा प्राप्त राज्यों को **अधिके वतितपोषण जैसे लाभ** प्रदान करता है, जसिमें **केंद्र प्रायोजति योजनाओं के लिये 90% धनराशा केंद्र द्वारा प्रदान की जाती है।**
 - ये राज्य एक वतित्तीय वर्ष से अगले वतित्तीय वर्ष तक अप्रयुक्त नधियों को आगे बढ़ा सकते हैं और कर रियायतों का लाभ उठा सकते हैं। इन्हें केंद्र के सकल बजट से 30% तक अधिके आवंटन भी मलिता है।

वशेष श्रेणी का दरजा (Special Category Status- SCS)

- **संवधान SCS के लिये प्रावधान नहीं करता है** और यह वर्गीकरण बाद में वर्ष 1969 में पाँचवें वतित्त आयोग की सफिरशियों के आधार पर किया गया था।
- पहली बार वर्ष 1969 में **जम्मू-कश्मीर, असम और नगालैंड** को यह दरजा दिया गया था
- पूर्व में **योजना आयोग की राष्ट्रीय विकास परिषद** द्वारा योजना के तहत सहायता के लिये SCS प्रदान किया गया था।
- **SCS, वशेष स्थिति से अलग है** जो बढ़े हुए वधियायी और राजनीतिक अधिकार प्रदान करती है, जबकि वशेष श्रेणी का दरजा (SCS) केवल आर्थिक तथा वतित्तीय पहलुओं से संबंधित है।